

॥ श्री हारि काधि शे वि  
 जयते ॥ श्री कृष्णाय  
 नमः ॥ ॥ अथ श्री स  
 कीर्तनम लिख्यते ॥ ॥  
 ॥ प्राकृतधर्मानां अ  
 यम प्राकृतनिखिल  
 धर्मरूपमिति ॥ नि  
 गमप्रतिपाद्यं यत्तु

॥१॥

इ सा कृति सौमि ॥ शक  
 लि कालतमच्छु नद  
 धित्वा हि दुषामपि ॥  
 संप्रत्य विषय सस्य ॥  
 महात्म्यं समभूदुवि ॥  
 ॥२॥ दययानि जमाहा  
 त्म्यं करिष्यन्प्रकरं ह  
 रिः ॥ वा एषा यदा तदा

॥१॥

स्वास्यं प्रादुर्नृतं चक  
 र हि ॥ शतदुक्तमपि  
 दुर्बोधं सुबोधं स्या  
 द्यथा तथा ॥ तन्नामा  
 कृत्तर शतं प्रवृत्त्या  
 म्पस्वि धाद्य हृत्स  
 ॥ ४ ॥ स विरगि कु  
 मार सुनाम्नां चं दोज

मत्पत्न्ये ॥ श्री कृष्णस्य  
 दिवसाच्च बीजेका  
 रुणिकः प्रभुः ॥ ५ ॥ वि  
 नियोगेन न्नियोगः  
 प्रतिबंधविनाशा  
 मे ॥ श्री कृष्णधराम  
 तास्वात्सिद्धिरव्यन  
 संशयः ॥ ६ ॥ ज्ञानं दः

॥२॥

॥२॥

परमानंदः श्री कृष्ण  
 संकृपानिधिः ॥ देवो  
 चारप्रयत्नात्मा स्म  
 तिमात्रार्तिनाशनः ॥  
 ॥ ७ ॥ श्रीनागवतगू  
 ढार्थप्रकाशनपर  
 यणः ॥ साकारब्रह्मवा  
 दैकस्थापकोवेदयो

रजः ॥ ८ ॥ माया वा इति  
 शकती सर्ववहिनिरा  
 सकृत् ॥ भक्ति मार्गज्व  
 मार्तंडः ॥ स्त्रीश्रु प्रद्युम्न  
 ति रुमः ॥ ९ ॥ अंगीकृ  
 त्वैव ज्योतीशवध्वनीक  
 तमानकः ॥ अंगीकृतौ  
 समर्थादो महा कालि

1  
 कोविन्दः ॥१०॥ अरेय  
 दानदक्षः ॥ महोदार  
 चरित्रवान् ॥ प्राकृतानु  
 कृतिव्याजमोहितासु  
 रमानुषः ॥११॥ वैश्वान  
 रोबुद्धभारव्यः ॥ सद्रूपो  
 हितकृत्सतां ॥ जन  
 शिष्टाकृतेकृष्ण

श्रीसर्वो.

॥४॥

क्तिकृन्निखिलेषुदः  
 ॥१२॥ सर्वलक्षण सं  
 पन्नः श्रीकृष्णज्ञान  
 योगुरुः ॥ स्वानंदतुंदि  
 लः पद्मदलायतवि  
 लोचनः ॥१३॥ कृपाहृ  
 त्कृष्णसंहृष्टदासदा  
 सीप्रियपतिः ॥ रोष

॥४॥



ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

दृक्यातसंपुष्ट नक्तदि  
 दृनाक्तसेवितः ॥१४॥ सु  
 खसेव्योदुरा राधो दुर्ल  
 नाक्रिसरोरुहः ॥३॥ अग्र  
 तापोवाकसीध पूरिता  
 शेषसेवकः ॥१५॥ श्रीना  
 गवतपीयूषः समुद्रम  
 यन रुमः ॥ तत्सार भूत

ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

रासस्त्रीभावशरितविय  
 हः ॥ १६ ॥ सान्निध्यमात्रद  
 त्त्रीकल्पप्रेमाविमुक्ति  
 दः ॥ रासलीलैकतात्यर्थः ॥  
 कपयैतत्कथाप्रदः ॥ १७ ॥  
 विरहानुभवकार्यः ॥ सर्व  
 त्प्रागेष्टदेशकः ॥ नत्प्रा  
 चारोपदेष्टा च ॥ कर्ममार्ग ॥ १४ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

प्रवर्तकः ॥ १८ ॥ यागा  
 दौ भक्ति मार्गैक साध  
 न लोपदेशकः ॥ पूर्ण  
 नेर्दः ॥ पूर्ण कामो वा  
 क्यतिर्विबुधे चरः ॥ १९ ॥  
 रुलनामसहस्रस्य ॥  
 वक्ता नक्तपण्यः ॥  
 नक्त्या चारोपदेशार्थः ॥

श्रीसर्गः

॥ ६ ॥

नानावाक्यनिरूपकः ॥  
 ॥ २० ॥ स्वार्थो जित्तास्त्रि  
 लक्षणप्रियसादृशवे  
 स्थितः ॥ स्वरास्वार्थक  
 ताशेषसाधनः सर्वेश  
 क्तिधृक् ॥ २१ ॥ नुविभ  
 क्तिप्रचारैककृतेस्वा  
 न्वयकृत्यिता ॥ स्ववंशे

॥ ६ ॥

स्थपिता शेषा स्वमहा  
 त्म्यः स्मयापहः ॥२३॥ पं  
 तिब्रतापतिः पार यौ  
 कि कैहिक हाचक  
 त् ॥ निगूढे दृ द्यो नम्य  
 मर्केषु शोपिता शयः  
 ॥२३॥ उपासनादिमा  
 र्कतिः सुग्ध मोहनिवा

श्री

॥५७॥

र कः ॥ भक्ति मार्ग सर्व  
 मार्ग वै लक्षणानु  
 भूति कृत ॥ २४ ॥ पृथ  
 क शरण मार्ग पदे  
 षा श्री कृष्ण हृद वि  
 त् ॥ प्रति कृष्ण नि कु  
 जस्य ॥ धी धार ससु  
 पूरितः ॥ २५ ॥ तत्कथा

॥७॥

हितचित्तसद्विस्म  
 तान्यो ब्रजप्रियः ॥  
 प्रियब्रजस्थितिः पु  
 ष्टिः श्रीलाकर्तार  
 हः प्रियः ॥ २६ ॥ नक्त  
 ष्यापूरकः सर्वाज्ञा  
 तलालोति मोहनः  
 सर्वासक्तो नक्तमा

॥८॥

त्रासकः पतित पाव  
 नः ॥२७॥ स्वयं शोभा  
 नसंहृष्ट हृदयं नो  
 जविष्ट रः ॥ यशपी  
 यूपलहरी ॥ प्रावि  
 ता न्यरसः परः ॥ २८ ॥  
 लीला मृतरसाई  
 डी ॥ कतारिचलश  
 रीरन्त ॥ गोवर्द्ध

॥९॥



नमः स्थित्युत्साहसद्वी  
 लाप्रेमपूरितः ॥ २० ॥  
 यज्ञभोक्ता यज्ञकर्ता ॥  
 चतुर्वर्गविचारदः ॥  
 ॥ सत्यप्रतिज्ञस्त्रिय  
 एणतीतो नयविचार  
 दः ॥ २० ॥ स्वकीर्तिवर्ध  
 नस्तत्त्वसूत्राष्टादश

कः ॥ माया वा हा  
 रण्य तू धा ग्नि ॥ ब्रह्म  
 वाद निरूपकः ॥ ३१ ॥  
 अत्रा कृता खि धा क  
 ध्य नू षितः सह जस्मि  
 तः ॥ त्रि धो की नू षणं  
 नू मि भा ग्ये सह ज  
 सुंदरः ॥ ३२ ॥ अशेष

मक्त संप्रार्थ्य नरणा  
 ज्वर जो धनः ॥ इत्या  
 नेदनिधेः प्रोक्तं ना  
 म्नामष्टौ नरंशतं  
 ॥ ३३ ॥ अष्टाविंशद्  
 बुद्धिर्यः षष्ठ्यनुदि  
 नंजनः ॥ सतदेकम  
 नाः सिद्धिः मुक्तं प्राप्नो

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ १० ॥  
 न्यसंशयं ॥ ४ ॥ त द  
 प्रा तौ व द्या मो रु स  
 द तौ त रु ता र्थ ता ॥

अतः सर्वो जमं स्तोत्रं  
 जयं कृष्ण रसार्थि ।

निः ॥ ३५ ॥ ॥ इति

श्रीमद्गुणिकुमार  
 प्रोक्तं सर्वो जम स्तोत्रं

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

संपूर्णम् ॥ शुभं भवतु ॥  
 लिखितं श्रीकांकरोहि  
 स्थनगरेमेंग्रहनिशु  
 भचितकपाडे छगनके  
 जोवांचे ता कुआशिर्वा  
 मिति चैत्र शुदि १३ सोम  
 संवत् १८७४ गे का ३

